साधु-सन्तोंका महत्त्व एवं कार्य

अनुक्रमणिका

* **भूमिका** ९

* **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण** ११

अध्याय १ : वास्तविक साधु-सन्त १२

१. व्याख्या २. महत्त्व १२

३. साधु-सन्त और तीर्थक्षेत्र १४

४. ढोंगी साधुओंकी सच्चाई सामने लानेवाले खरे सन्त १६

५. भावी हिन्दू राष्ट्रमें केवल खरे सन्तोंको ही 'साधु', 'महाराज', 'स्वामी' आदि कहलानेका अधिकार होगा ! १७

अध्याय २ : सन्तोंकी पात्रता न जाननेवाले बुद्धिवादी, पुलिस, प्रचारमाध्यम और राजनीतिक दल १८

१. बुद्धिवादी (अन्धश्रद्धा निर्मूलन अधिनियम और सन्त) १८

२. सन्तोंपर अत्याचार करनेवाले पुलिसकर्मी २३

३. सन्तोंका अपप्रचार करनेवाले प्रचारमाध्यम २५

४. राजनीतिक दल और सन्त २९

अध्याय ३ : हिन्दुओंकी दुर्दशा तथा उसे सुधारनेके उपाय ३७

१. भगत और महाराज के पास विविध समस्याओंके लिए जानेवालोंकी संख्या दिन-प्रतिदिन बढनेके कारणोंका किया गया वैज्ञानिक शोध ३७

२. रामकृष्ण मिशनकी ओरसे विज्ञापनमें श्री रामकृष्ण परमहंसके धर्मनिरपेक्ष सन्त होनेका उल्लेख ! ३८

३. हिन्दुओंकी दुर्दशा व बलवान हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनोंकी निष्क्रियता ३९

४. हिन्दुओंकी दुर्दशा सुधारनेके उपाय और सन्तोंसे अपेक्षित कार्य ४१

अध्याय ४ : सन्तोंद्वारा किए जा रहे राष्ट्र और धर्म सम्बन्धी कार्य ४४

१. सर्वसाधारण जानकारी ४४
२. योगगुरु रामदेवबाबाके कार्य ४९
३. पूज्यपाद सन्त श्री आसारामजी बापूके कार्य ५१
४. मुसलमानों के सन्दर्भमें कार्य ५२
५. सन्तोंद्वारा किया जा रहा अनमोल कार्य ६०
अध्याय ५ : विविध विषयोंपर सन्तोंका मार्गदर्शन ६१
१. हिन्दुओंकी स्थिति २. मनुष्य ६१
३. मन्दिर ४. गोहत्या ६४
५. राष्ट्रऔर धर्मकी स्थिति ६५
६. राष्ट्रऔर धर्मकी स्थितिपर उपाय ६५
७. स्वरक्षा प्रशिक्षण ६६
८. धर्माचार्य और सन्तोंकी स्थिति ६६
अध्याय ६ : सन्त और सनातन संस्था ६७
१. सनातनके सन्त और उनकी विशेषताएं ६७
२. अन्य सम्प्रदाय और सनातन संस्था ७०
३. सनातन संस्थाके कार्यकी सन्तोंद्वारा की गई प्रशंसा ७१
४. सन्तोंद्वारा की जा रही सनातनकी सहायता ७५
अध्याय ७ : हिन्दुओ, सन्तों के प्रति अपना कर्तव्य निभाएं! ८१

भूमिका

धार्मिक ग्रन्थ 'दासबोध' में(दशक ७, समास २, छन्द ३१) लिखा है- 'बाहरसे भिन्न-भिन्न दिखाई देनेवाले साधु-सन्त भीतरसे परमात्मासे मिले होते हैं', यह निराकार भगवानकी ओर जानेके लिए उनके साकार रूप सन्त ही मार्गदर्शन कर सकते हैं। 'स तरति स तरति स लोकांस्तारयति ।' (नारदभक्तिसूत्र, अध्याय ३, सूत्र १७) अर्थात, 'सन्त (भवसागरसे) तरते हैं और दूसरोंको भी तारते हैं।' इसीलिए सन्त तीर्थक्षेत्रसे श्रेष्ठ होते हैं।

आजकलके प्रचारमाध्यम आध्यात्मिक दृष्टिसे अधिकारी हिन्दुओंके साधु-सन्तोंद्वारा धर्म और संस्कृति रक्षा में दिया जा रहा बहुमोल योगदान पूर्णतः नकार रहे हैं और समाज में उनकी छवि मलिन कर रहे हैं। इसके लिए वे उनपर नित नए-नए आधारहीन आरोप लगाते हैं। पश्चिमी संस्कृतिका प्रभाव, वास्तविक सन्तोंकी आलोचना करनेवाले दुराचारी, प्रसिद्धिलोलुप तथाकथित साधु, हिन्दूद्रोही बुद्धिवादी, अवसरवादी राज्यकर्ता तथा हिन्दूद्वेषी प्रचारमाध्यम निरन्तर हिन्दुओंके आस्थाकेन्द्रोंको कलंकित करनेका कार्यकर रहे हैं। यह सारा प्रयत्न केवल इसलिए है कि सर्वसाधारण हिन्दुओंकी श्रद्धा टूटे और वे धर्माचरण करना छोड दें। इससे हिन्दू समाज भ्रमित हो गया है। भ्रमित होने के कारण वह सच्चे साधु-सन्तोंको पहचान नहीं पा रहा है और उन्हें आदरभावकी दृष्टिसे नहीं देख पा रहा है। हिन्दू साधु-सन्तोंपर झूठे आरोप लगाकर उनकी छवि निरन्तर मलिन करनेवाले कुछ प्रचारमाध्यमोंके उदाहरण इस ग्रन्थ में दिए हैं।

अबतक राजनेता और उनके हाथों की कठपुतली बनी पुलिस भी साधु-सन्तोंका महत्त्व नहीं समझ पाई है और उन्हें कष्ट दे रही है। कुछ प्रसिद्धिलोलुप दुराचारी साधुभी स्वार्थवश राज्यकर्ताओं और पुलिस से मिलकर वास्तविक धर्माचार्यों को समाजके सामने अपराधी सिद्ध करनेके प्रयत्न बढ-चढ कर करते हैं। हिन्दूसन्तोंपर अत्याचार करने के लिए सदैव तत्पर तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावाद के ठेकेदार, राज्यकर्ता, पुलिस और बुद्धिवादियोंका वास्तविक रूप आप इस ग्रन्थमें देख पाएंगे।

साधु-सन्तोंकी समाजमनपर अंकित की जानेवाली विकृत छवि और हिन्दुओं में धर्माभिमानका अभाव, इन कारणों से आज सामान्य हिन्दू खरे साधु-सन्तोंसे दूर होता जा रहा है। उचित मार्गदर्शन के अभाव में उनकी स्थिति भ्रमित व्यक्तिकी भांति हो गई है। इस ग्रन्थ में ऐसे भ्रमित और दिशाहीन हिन्दू तथा हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनोंकी स्थिति विशद की गई है। वर्तमानमें, दिशाहीन हिन्दुओंका उचित मार्गदर्शन करना और उनसे साधना करवाना ही साधु-सन्तोंसे अपेक्षित है। हिन्दू और हिन्दुत्वनिष्ठ संगठनोंकी दुर्दशा का सटीक उपाय तथा जगदोद्धार के लिए जीवन समर्पित करनेवाले साधु-सन्तोंके अनमोल मार्गदर्शन के कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र भी इस ग्रन्थ में दिए हैं।

राष्ट्र और धर्मकी स्थिति विकट होने के कारण उसमें सुधार लाने के लिए अनेक साधु-सन्त कार्यरत हैं। उनमें से कुछ साधु-सन्तोंकी जानकारी इस ग्रन्थ में दी है। साथ ही, राष्ट्र और धर्म का कार्य करनेवाली सनातन संस्था और हिन्दूजनजागृति समिति के विषय में सन्तोंके गौरवोद्गार भी इस ग्रन्थमें दिए हैं।

धर्माधिष्ठित और सुसंस्कृत समाजका गठन करनेवाले एवं ईश्वरीय चैतन्यका स्रोत लोगों तक पहुंचाकर उन्हें सांसारिक बन्धनोंसे मुक्त कर भवसागर पार करवानेवाले साधु-सन्त ईश्वरके सगुण रूप ही हैं। हिन्दू धर्मकी ये अत्यन्त आदरणीय तथा गौरवास्पद विभूतियां दीपस्तम्भके समान हिन्दुओंका मार्गदर्शन करती हैं तथा उनका ऐहिक और आध्यात्मिक जीवन सरल बनाकर आनन्दप्राप्ति करवाती हैं। ये हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर ही हैं। कीर्ति, धनकी चाह न

रखनेवाले, मठबाजी और ढोंगबाजी न करनेवाले; प्रीति और भक्ति के अपूर्वसंगम, सदैव लोगों के कल्याण और समाज हित की चिन्ता करनेवाले साधु-सन्त आज भी इस भूतलपर विद्यमान हैं। हमारे पास केवल उन्हें जानने की दृष्टि होनी चाहिए । यह दृष्टि साधना करने से ही निर्माण हो सकती है।

'यह ग्रन्थ पढकर हिन्दुओं को खरे साधु-सन्तोंको जानने की दृष्टि प्राप्त हो। उनकेद्वारा किए जानेवाले कार्य की महत्ता सभी समझ सकें और हिन्दुओंको उनका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त होकर उनका जीवन सार्थक हो, अर्थात उनकी आध्यात्मिक उन्नति हो', ऐसी ईश्वरके चरणों में प्रार्थना है।' - **संकलनकर्ता**